Chachak Ki Pu

چیچک کی پوتھی

चेचककीपोथी

दरबारः लगाने टीका चेचक मुवल्फः

एजक न्यूटन साहिब बहादर सारजन

कायम मुकाम

सुपरिनटैनडैंट

[ज]नरल महकमे वैक्सीनेशन मुलक पंजाब वगैरः ॥

दफे

का व्या

क्योंकि

कम वाकि ॥

गई

दफे

बहुतसी फ

मशहूर है

TEL ... PRESS LAHORE"

वैचककीपोथी

दीबाज: ॥

वरकमुफ़सल: जैल दो मतालब के वास्ते लिखे जाते हैं अव्वल यह कि एक रसाल: मुख़्तसर वास्ते फ़ायद: अहिल अमले महकमे वैक्सीनेशन के त्यार किया जावे। और दूसरे लोगों को टीका चेचक और मनशाए गवर मिंट से जो दरबार: इस के है आगाह किया जावे ॥

चेचक॥

दफ़े दूसरी। पहिले इस के कि हाल वैक्सीनेशन याने टीका ब्यान किया जावे। हम थोड़ा हाल चेचकका लिखते हैं क्योंकि देसी लोग इस ख़ौफ़नाक बीमारीके नतीजों सेबहुत कम वाक़िफ़हैं ॥

तारीख़ बीमारी चेचक॥

दफ़े तीसरी। चेचक सब से पुरानी बीमारी और बहुतसी फैली हुई उन बीमारियों में से है जो दुनियांमें मशहूर हैं ख्याल किया जाता है कि मुलक मिसरमें यह

बीमारी बतौर वबा अरसे २२७३ साल से है। और तवारीख़ बाशंदगान चीन और अहिल हिंद में आगाज़ इस बीमारी का उसी ज़माने में शुमार किया गया है अहिल युनान वा रूम इस बीमारी में २००० बर्स सेपहिले मुवतला थे और ईसाई बाशंदगान वा एबीसीनिया १३०० बर्स से इस बीमारी के ख़ौफ से मुकाम मक्का:में जो अर्ब में है रंज वा दुख उठा रहे थे हिन्दू शास्त्रकदीम में २००० वर्स से पेशतर ब्यान तश.ख़ीस अलामाततरक्की वा इनजाम बीमारी चेचक वगैर: की दवाई याने अदबीयात् जो उस व.क़त में रायज थी लिखा है। वहुत से नावा.क़फ हिंदू लोग ख्याल करते हैं कि इस बीमारी की कुछ दवाई करानी नहीं चाहिये यह बात बर.ख़िलाफ उन के शास्त्र के है॥

सबब मर्ज़ सीतला॥

दफ़े चौथी। बहुत सबब इस बीमारी का एक.ख़ास किस्म की .ज़हर है जो किसी श.ख़स के बीमार होने से पैदा होती है। और यह बीमारी हवा से और बीमारों की या उन के कपड़े वगैर: छूने से हो जाती है गोबर वा गंदे नाले वा कीचड़ वा और मैलीवा .ख़राब चीज़ों से म.र्ज फैल जाती है। मिसल दीगर बीमारियों याने असर करनेवालियों से चेचकभी बहुत फैलनेवाली बीमारी है। और ज़ियाद: तर मौसम बहार में वनिसबत और किसी वक्त केयूरप और मश्रकी मुलकों में फैलती है बहुत सरदी में बीमारी चेचक की

बंद हो जाती है ॥

मौत चेचक से॥

दफ़े पांचवीं। जब तक कि वैक्सीनेशन याने टीका .जाहर नहीं हुआ था तब तक बीमारी चेचकसे यूरुप वाले निहायत .खौफ़नाक थे और अब तक यह बीमारी चेचक हिंदुस्तान में वैसी ही .खौफ़नाक है ॥

मकालब साहिब जो इंगलिस्तान का बड़ा मुवर.ख था १७ सदी के आ.खीर पर इस बीमारी की निसबत हसबजैल लिखता है। किबीमारी चेचक हमेशा:नमूदार रहती है और क.बरस्तान इस बीमारी के मुवतलाओं कीलाशों से भर जाते थे। और जिन श.खसों कीजान इसबीमारी सेबच जाती थी उन के बदन पर निशानात चेकक के .जाहर रहते थे यहां तक कि छोटे बच्चों कीशकल बदल जाती थी। और उन के मा बाप देखकरघबराते थे और आंखें गाल्हें लड़कों कीऐसी होती थीं। उन के दोस्त देखकर हैरान रहते थे जब तक कि टीका चेचक जारी न किया गया तब तक ऐसा ही हालरहा। और क्या यही हाल इस मुलक मे अब तक नहींचला जाता है। इंगलिस्तान में अरसे ३० साल गुजस्ता सदी में सालयाना तैदाद मुरदों की बीमारी चेचक से ३४००० से ३६००० तक थी याने हर एक लाख आदमी की आबादी मे तीन हजा.र आदमी सालयाना मरते थे। अब यह बीमारी उस व.कत की निसबत यूरुप में बहुत कम है ॥

जो देसी लोग न.जदीक छावनी के रहते हैं वुहव.खूबी देख लेवेंगे कि किसी अंगरे.ज पर नशान चेचकके बहुत कम न.जर आवेंगे पस सबब इस का क्या है कि इन पर टीका लगाया गया था और किसी किसी पर दो दो दफे वैक्सीनेशन किया था ॥

बीमारी चेचक से पंजाब में सन् १८६८ ईस्वी में ५३१८५ आदमी मरे या इस तरह पर कि ३-०५ आद मों की आदम में से मरे ॥

और तमाम अहिल फरंग वसकनाय बंगाल अहातः की तैदाद मर्द वा औरत और बच्चों की ४४२८० है और सन् १८६८ में २२ आदमी मरे या इस तरह पर एक आदमी २००० में से मरा बावजूदे कि यह बीमारी हिंदुस्तानियों को बराबर थी न.कशेजात यूरुप में अब मालूम हुआ है कि जहां पर टीका नहीं हुआ वहां २५ आदमी फी सदी १०० में से मरते थे लेकिन बच्चे .खुरद साल जिन की उमर ५ साल से कम है वुह बहिसाब ५० फी सदी मरते थे और उन में से जो इस बीमारी से सेहत पाते थे बहुत से हमेशा; के लिये बदशकल होजातेथे वा.जों की न.जर में फर.क आ जाता है और किसी की सेहत में आम फर.क आ जाता है और जिन लोगोंको टीका लगाया जाता है उन की औसत फौतीदगी बीमारी चेचक से आम ७ आदमी फीसदी है ॥

इलाज बीमारी चेंचक

दफ़े छेवीं। अब हम चंद आसान कायदे लिखते हैं कि जिन की पैरवो करनी चाहिये जब कि किसी आदमी को बीमारी चेचक असर कर जावे और अगर उन कवायद पर अमल किया जावेगा तो बीमार के वास्ते मुफ़ीद होगा। हवा घरकी साफ और सरद रखनी चाहिये और कपड़े उस श.ख़्स के जिस पर बीमारी चेचक का असर हो गया हो बार बार बदलाने चाहिये और मैले कपड़े उबले हुए पानी में डाल कर एक घंटे तक उस में रखने चाहिये ताकि बदबू उन को दूर होजावे और थोड़ीसी गंधक की डली लेकर एक कोइले पर दिन में दोतीन दफ़े जलानी चाहिये ताकि मकान साफ़ हो जावे कि हम जानते हैं कि यह बीमारी निहायत फैलने वाली है इस वास्ते जरूर है कि बीमारको और आदमी से अलहद: रखा जावे सिवाय उन के जिन को चेचक निकल चुकी होबदन बीमार को गरमपानी से हररो.ज व.जरीयेसपंज धोना चाहिये। और बाद उस के थोड़ासा मीठा तेल या पोस्त का तेलऊपर बदन उस बीमार के लगाना चाहिये। इमली या निम्बू का अर.क पिलाना चाहिये ताकिप्यास कम हो जावे। और थोड़ासा इस में शोरा मिला देना चाहिये और नुसख़: इस का जैल में दरजहै। इमली छटांक १, निम्बू ४ या ५ अदद, चीनी छटांक १, शोरा २ तोले, उबाला हुआ पानीआध सेर यहपानी घंटेतक ठहराना चाहिये। अगर घबरा

हट हो तो थोंड़ीसी अफयून दिन में दो दफे करके देनी चाहिये और अगर कब.ज हो तो नरमसा जुलाब करा देना चाहिये। मुसलमान या दूसरे लोग जिन को गोश्त खाने की मुमानियत नहीं है उन कोशोरवा या चावल खाने को देने चाहिये। और वुहलोग जो गोश्त नहीं खाते उन को दूध सागूदाना देनाचाहिये। और बच्चों को कसरतसे दूध पिलानाचाहिये बदन बीमार और मकान कोसाफ रखना चाहिये। खाने को थोड़ा थोड़ा देना चाहिये बदफे यात देनाचाहिये॥

टीका इन आक्यूलेशन॥

दफे सातवीं।पुराना इलाज इसबीमारी के वास्ते टीका देसी याने मुवाद चेचक का लेकर दूसरे आदमी के बदन पर जिस को चेचक नहीं निकली जिलद में सूई से पैवस्त कर देते थे इस से थोड़ी चेचक निकलआती है॥

तारी.ख इन आक्यूलेशन॥

दफे आठवीं। कहते हैं कि यह दस्तूर अव्वल ही अव्वल जंगलात अर्ब में निकला ख्याल किया जाता है कि दसवीं सदी के आ.खीर पर सब से पहिले इस का रवाज मुलकचीन में बतौर इलाजथा कि जिस से चेचक कम निकले वुह लोग छिलका चेचक बीमार चेचक से लेकर नाक केअंदर डाल दिया करते थे और कभी इस छिलके चेचक को पीसकर इस की नसवार बच्चोंको देते थे यह दस्तूर बर्सोंसे हिंदुस्तान में मशहूर है। गालबन चीन से लाकर यह दस्तूर जारी कियागया था मुलक फारस

वा अरमनिया वा जारजिया वा यूनान में बहुत मुद्दत तक जारी रहा जनूबी वा मगरबी हिस्से जात यूरुप में जिस में सूबे जात इटली और मुलक फारस वा जरमनी वा स्वीडन वा डेनमार्क वा ग्रेटब्रीटन हैं इस रसम का मशहूर होना दरम्यान दहकानों के बहुत मुद्दत तक पाया जाता है। इंगलिस्तान में पहिले इस को सन् १८२२ ईस्वी में कानस्टंटरोपल याने कसतंतनियां से लाकर जारी किया गया और यहदस्तूर सबब बहुत से नुकसान जान का था। जब कि इस से वह लोग जो इनाक्यूलेटिड याने मुवाद सीतला से टीका किये हुए बच जाते थे मगर यह वबा चेचक बहुत ही बढ़ जाती थी। बनिसबत इस के कि किसी और तरह पर ठहरती पस तैताद फौत शुदगान सन् १७८२ ईस्वी में शहर लंदन बनिसबत पहिले बर्सों के बहुत बध गई जब से कि वैक्सीनेशन इंगलिस्तान में जारी किया गया तबसे इन आक्यूलेशन होने के वस्ते स.जामुकरर किइ गई है। और अगर कोई बीमार सीतला आम में निकले तो उस के वास्ते भी मुकरर है। और वैक्सीनेशन सलतनत मुतसीलहद: ग्रेटब्रीटन ला.जमी है और उस का यह नतीजा हुआ कि आयरलैंड में इस बीमारीका नाम वा नशान भी नहीं रहा और सकाटलैंड में भी बहुत कम यह बीमारी चेचक रह गई है। अब अगर कोई श.खस पूछे कि इस का क्या सबब है कि आयरलैंट में यह बीमारी नेस्तनाबूद हो गई। और इंगलिस्तान में क्योंनहीं हुई तो जवाब इस का यह है कि आयरलैंड में

वैक्सीनेशन बिनिसबत इंगलिस्तान के बहुत अच्छी तरह से कियागया और यूनाइटिड सिटेटस याने मिले हुए सूबेजात में जहां पर वैक्सीनेशन लाज़मी है वहां पर चेचक नेस्तनाबूद हो गई है अब बहुत से हिस्से जात हिंदुस्तान में टीका इन आक्यूलेशन किया जाता है मगर जब कि फायदे वैक्सीनेशन के लोगों को मालूम हो जावें तब टीका इन आक्यूलेशन कम हो जावेगा वाजे कसबे जात वमुकामात कलां वाकः बंगालवा कमायूं व्रागहडवाल के पहाड़ों में इन आक्यूलेशन के वास्तेसजा मुकररहै। अगरच इन आक्युलेशन से जो अच्छीतरहकिया जावे तो चेचक कमनिकलतीहै। लेकिन हमेशः बीमारीसख़त होने में जिस के लिये निहायत होश्यारी और तवजः इलाज मालजः करना पड़ता था अकसर कर के बीमार मर जाते थे। और अंधे वगैरः होजाते थे। और सेहत में सालहा तक फरक आ जाताथा।सिवाय इस के चूंकि यह बीमारी सरायती और तकलीफ देनेवाली है। इस लिये यह बीमारी बहुत फैल जातीहै और हमेशः केवास्ते कायम रहती है पस इन आक्यूलेशन अब सिरफ वुही लोग कराते हैं जो नावाक़िफ़ हैं और जिन्हों ने फायदे वैक्सीनेशन नहीं सुने॥

गौथन सीतला

दफ़े नवीं। एक किसम की बीमारी चारपायों को होती है और ख़सूसन उन्हीं मुलकों में जहां चेचक इनसानों को हुई थी यह बीमारी मादगाव की गौथन सीतला कहलाती

और थनोंपर बशकल दाने दाने निकलती है और यह दाने गिर देसे ऊंचे और बीच में से दबे हुए और सुरखी में घिरे हुए होते हैं और उन में साफ पानी होता है और यह दाने बरंग आसमानी होते हैं जबकि यह बीमारी जोर से जाहर होती है तो सिरफ लेवा याने लेवटी पर ही नहि होती है बलिक तमाम बदन पर हो जाती है। और हिंदुस्तान में एक बीमारी और तरह की चारपायों को निकलती है चुनांच उसको गौथन सीतला नहीं शुमार करना चाहिये अगर चनाम बसंत माता वा गौत्ती देसी लोगों ने रखे हैं। और यह नाम बहुत सी बीमारियां चारपायों को दिये गये हैं कोई कोई इस बीमारी में से बहुत जोर से नहीं निलकती है। और निहायत हिलाक कुनिंदा होती है यह बीमारी गौथन सीतला में बिल्कुल मुखतलिफ है

मालूमात वेक्सीनेशन याने टीका॥

दफे दसवीं। सन् १७९८ ईस्वीं में जिसको ७० साल से जयादा अरसा गुजरा डाकटर जैनर साहिब हकीम अंगरेजीने इस अमर का .कायल होकर यह बीमारी जो इन्सानों को और चारपायों को निकलती है। एक ही है उस ने इस नरम लाग को इस तरह पर लगाया कि एक दाने से जो गाय के थन पर था लिंफ याने पानी निकालकर एक इन्सान के बाजू पर लगा दिया और बाद चंद रोज के वैसा ही दाना जैसा गाय के थन पर था जगह टीका लगाने पर जाहर हो गया और उस दाने से लिंफ याने पानी निकालकर दूसरे आदमी के बाजू पर ला दिया वैसा ही नतीजा वहां पर हुआऔर इसी तरह पर एक से दूसरे वा

दूसरे से तीसरे को वे शुमार लगाता लगाता चला गया उन सब को सीतला न निकली ॥

आदमी और गांय की चेचक एक ही सबब से होतीहै ॥

इमतहान से साबत हुआ है किअसल गौथन सीतला बअसफ सीतला और चेचक इन्सानी एक ही सबब से होती है लेकिन अगरच गौथन सीतला और चेचक का एक ही असर पैदा होना साबत किया गया है मगर गांय के निकल ने से इस की कुवत और जोर फैल जानेका दरम्यानइन्सानकी दूरहो जाता है गौथन सीतला आदमी में सिरफ वसीले टीका इन आक्यूलेशन खास माद: इसबीमारी के दाखिल किये जा सकते हैं टीका इनाक्यूलेशन गांयसे घोड़े से माद: चेचक लेकर हो सकताहैं । लेकिन जैसा किडाकटर जैनर साहिबने लिखा है वह बहुत अच्छा है और यकीन है कि हकीकत में चेचक गाय पर निकलने से कमजोर हो जाता है। पस हम लोग नासिरफ गाय का दूध पीने से शुकर गुजार है बलिक इस से वैक्सीनेशन जो निहायत मुफीद है इन्सान कोहासिल होता है। और हिंदुओं पर इसका जरूर असर होना चाहिये ॥

सबूत इस बात का कि वैकसीनेशन का टीका लगाने से सीतला नहीं निकलती ॥

जब कि डाकटर जैनर साहिब ने टीका वैक्सीनेशन मालूम किया तो उस वकत यूरुप में टीका इनाक्यूलेशन का रवाज था और शक रफा करने के वास्ते जिन लोगों को वैक्सीनेशन

किया गया उनको हमराह उन लोगों के रखा गया जिन को चेचक निकल रही थी और उन को हमराह बीमारान चेचक सुलाया गया और टीका इनाक्यूलेशन भी किया गया मगर ताहम सीतला न निकली ॥

इनाम वास्ते मालूमात वैकसीनेशन यानेटीका ॥

डाकटर जैनर साहिब को वरीटिस गवरमिंट ने इन मालूमात के वास्ते ३०००००रुपया इनाम दिया और बादशाह रूसने उस के वास्ते १ एक अंगूठी जड़ाऊ हीरे को भेजी गलोशिसटर के शहिर के रईसों ने उस को १ सोने का प्याला दिया। और खानदान शाही और रूसाय ने बहुतसी उस की कदर बढ़्जत किई और हिंदुस्तान से रूसाय कलकत्ते वगैर: ने उन को ४०००० रुपया भेजा और बंबई से २०००० रुपया और मदरास से १३८३० रुपया उस के वास्ते भेजा गया ॥

टीका वैकसीनेशन का फैलाउ ॥

टीका वैक्सीनेशन जलद तर यूरूप में फैल गया बाद उसके अमरीका म और उस के बाद चीन और हिंदुस्तान में जारी हो गया। सब से पहिले अव्वल शाह ए रूस ने मिनजुमल: बादशाह के अपने बचे को टीका लगवाया सन् १८५६ ईस्वी में टीका वैक्सीनेशन जनूबी अमरीका में बमुजिब हुकम शाह स्पेन के जारी किया गया और तमाम बाशंदगान ने उस को खुशी से कबूल किया क्योंकि चेचक ने बहुत दिक्क कर रखा था अहिलचीन चेचक के सबब से बहुत तकलीफ उठाते थे टीका वैक्सीने

शन की अज जानब खुदा समझकर एक चंदा वास्ते तकररी महकमे वैक्सीनेशन और वास्ते तरक्की टीका मजकूर: हिस्से यूरुप में तजवोज किई ॥

मई सन् १८५२ ईस्वी में सब से अव्वल मवाद वैक्सीनेशन हिंदुस्तान में पहुंचा दो टुकड़े शीशे के दरम्यान रखकर लाया गया और माद: टीका लगाने का शहिर बस्सरा को भेजा गया इस जगह पर वैक्सीनेशन बखूबी हुआ बाद चंद हफतों के बंबई को भेजा गया यहां से टीका वैक्सीनेशन तमाम हिंदुस्तान में फैल गया ॥

मुजाहमत अज जानब इनाक्यूलेटर याने टीका कुन्दगान माद: चेचक

अव्वल ही अव्वल जब टीका वैक्सीनेशन कलकत्ते और उसके गिरदनवाह में जारी किया गया तो अमूमन टीका इन आक्यूलेशन का रवाज था तखमोनन् १००० इन आक्यूलेटर याने टीका मवाद चेचक से लेकर सूई वगैर: से करनेवाले थे जिन्हों ने अमल वैक्सीनेशन को बहुत रोका मगर बाद कुछ अरसेके उन को तर्गीब दिई गई कि वुह खुद इस हुनर जदीद को इसतामाल में लावें और इन लोगों में जो ब्राह्मण थे इन्हों ने पीछे से एक पोथी याने किताब छपा दिई कि बीमारी चेचक टीका वैक्सीनेशन से दूर हो जाती है ।

और कोई अमर इस में काबल एतराज हिंदूओं के वास्ते नहीं है।

वेद में भी जिकर वैकसीनेशन का है ॥

सिवाय इस के कहते हैं कि जिकर वैक्सीनेशन सत्या नग्रंथ में जो पुरानी हिंदूओं की किताब हिकमत है दरज है । और ठीक ही फायदे वास्ते इस के धनवंतर जो कि बजुर्ग हुकमा अहिल हनूद है जो कि पहिले अहद इस कौका के से दो हजार बर्स गुजरे हो चुका है । मुकरर किये हैं एक बर्स हुआ कि विद्वतजन पंडितों बंगाल ने एक मुख्तसर हकीकत वेद का इस मज़मून से छपवाया है कि वैक्सीनेशन का जिकर शास्त्रों में भी है और तमाम हिंदूओं को चाहिये कि इस को कबूल करें इस में किसी तरह का नुकसान नहीं है ॥

वैकसीनेशन से चेचक नहीं निकलती ॥

अगर अच्छी तरह स टीका वैक्सीनेशन किया जावे तो चेचक नहीं निकलती है जब कि अगर एक दफे निकल चुकी हो तो दुबारः बरामद नहीं होती । हर एक इन्सान के खून में एक ऐसा किस्म का माद्दः होता है कि जिस से चेचक बरामद होती है जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं । गोयन सीतला एक मुबद्दल शकल चेचक की है यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि इस में वुही माद्दः होता है और इस लिये चेचक को निकलने से रोकता है ॥

बाजे शखसों को बाद वैकसीनेशन के चेचक निकलने का बायस ॥

बाजे दफे यह देखते हैं कि उन शखसों को जिन को

वैक्सीनेशन हो चुका है चेचक निकल आती है मगर बहुत कम ऐसा होता है और जब निकलती भी है तो थोड़ी निकलती है। बायस इसका यह है कि कुछ माद: खून जिस से निकलती है वैक्सीनेशन से खुश्क नहीं होता या बाजे लोगों को यह माद: नये सिर से पैदा होता है। इस वास्ते मुनासिब है कि वैक्सीनेशन दुबार: किया जावे और इस के वास्ते उमद: वकत दरम्यान १४ या १५ बर्स के है बाजे हिंदुस्तानी लोगों का यह ख्याल है कि सिरफ वैक्सीनेशन अहिल फरंगस्तान के वास्ते ही मुफीद है यह उन की गलती है क्योंकि अगर वैक्सीनेशन अच्छी तरह से किया जावे तो जैसा कि और जगह फायद: होता है ऐसा ही हिंदुस्तानियों को होगा ॥

एक दृष्टांत दिया जाता है वास्ते सबूत इस अमर के कि वैकसीनेशन के बाद चेचक नहीं निकलती ॥

यह अमर कि वैक्सीनेशन के बाद चेचक नहीं निकलती सहज से साबत हो सक्ता है चुनांच हम इस का एक दृष्टान्त याने मसाल देते हैं। एक बंगाली के बालबच्चों को मुलक कमाऊं में वैक्सीनेशन किया गया उस के बाद वुह बंगाल: में गये। उस बंगाली के कुनबे को टीका इनआक्यूलेशन पर इतबार था और अंग्रेजी टीका वैक्सीनेशन पर इतकाद न था चुनांच जिन बच्चों को पहिले टीका वैक्सीनेशन हो चुका। उनको इनआक्यूलेशन करा या गया मगर किसी तरह की उन को शेचक न निकली

और भी बहुत से प्रमाण हैं मगर यहां पर एक का ही जिकर काफी है॥

हफाजत चेचक से जब कि फैली हुई हो

कभी२ ऐसा होताहै कि चेचक उन मुकामात में लोगों को निकली हुई होती हैं जहां पर वेक्सीनेटर काम करते हैं तब बात इस में यह है कि या तो ऐसे वकत पर जब कि बच्चों को असर पहुंच जाता है टीका लगाने से कुच्छ फ़ायद: होगा या नहीं। अगर चेचक असर कर गई हो और तीन दिन के अंदर टीका किया जावे तो बीमारी से फायद: हो जावेगा। अगर चार दिन तक टीका न किया जावे तो चेचक बरामद होगी लेकिन कम। और अगर पांच दिन तक टीका न किया जावे तो इस का कुछ फायद: न होगा॥

जिस कदर टीका दुरुस्त होगा उसी कदर फायद: होगा॥

जिस कदर टीका कामल होगा उसी कदर फायद: होगा याने हसब सफाई और कुव्वत माद: (वायरस) या के लागदान: वैक्सीनेशन और नीज तैदाद दान: वैक्सीनेशन की जो बरामद हो छ: से कम न होने चाहिये॥

किस्म मामूल दाना वैकसीनेशन॥

तीन दिन बाद टीका लगाने से बीमारी वैक्सीनेशन शुरू होतीहै। जिस जगह पर नस्तर लगाई गई है वहां सुरख जगह होती है। और पांचवें दिन वहां पर दान: पैदा

होत है । औररंग उन का सुफ़ैद मायल वा नील होता है। और उस में माद: पानीसा होता है यह दान: ७ वें या ८ वें दिन त-क बढ़ता है । और गोल मोती की तरह नजर आता है। बशरते कि बदन साफ हो और गिरद से ऊंचा । और बीच में से दबा हुआ ८वें दिन के कुच्छ अरसे पहिले या पीछे जै-सा कि मौसम हो एक घेरा सा दाने के गिरद हो जाता है । उस को ऐरीओला कहते हैं दाना या ऐरीओला ११ वें या १२ वें दिन तक एकठे बढ़ते रहते हैं और फिर घटने लग जाते हैं ९ दिन बाद दाने का माद: गाढ़ा हो जाता है ११ वें दिन माद: दाने का गंद: हो जाता है इस के बाद यह माद: लिंफ खुश्क होने लगता है। और नशान इस का यह है। कि भूसला दाग दरम्यान में पैदा हो जाता है जैसा कि यह दाग बढता जाता है। उसी कदर ऐरीओला घटता जाता है और १२ या १५ दिन तक सिवाय एक भूसला छिलका सखत के और कुछ बाकी नही रहता । और यहदर म्यान से दबा हुआ होताहै फिर यह छिलका खुश्क होकर स्याह हो जाता है। और २० या २५ दिन में गिर जाता है खास दबाउ बाकी उमर तक रहता है। और इस नशान के मौजूद होते फिर चेचक नहीं निकलेगी

इमतहान इस वात का कि टीका वैक्सी नेशन कामल हुआ या नहीं

अगर नशान दवामीकुतर का जगह दाने वैक्सीनेशन मिक-

दार में आध इंच न हो और दबा हुआ नहो जिस से दान: की शकल बनी घी तो शुभा रहेगा कि इलाज बीमारीअ-च्छा न हुआ और अगर कम से कम चार दानें के न शान ऐहे नहीं तो इलाज कामल न हुआ फकत जब ऐरीओला होताहै तो कदरे बेचैनी या बदन गरमसा याने तप हो जाता है। मगर इस तप से कुछ अंदेश: नहीं होता बलिक इसकी जरूरत है और यह तप खुद बखुद दूर हो जाता है॥

टीका देने का तौर॥

अच्छे दाने से लाग लेने के लिये चन्द छेद करो और इस का खियाल रखो कि खून बरामद न हो और इन छेद से मवाद निकालो मगर किसी तरह जोर या दबाओ वगैर: मत दो जो मवाद खुद बखुद निकले उस्को लेलो। सिरफ़ म वाद पानी हो नहो बलिक मवाद हो और पेशतर ज़ाहिर होने ऐरीओला के यह मवाद लेना चाहिये बाजू बच्चे की वक़्त टीका लगाने के इसतरह पकड़ना चाहिये किबाजू की बायें हाथ में लेकर मज़बूत पकड़े और नस्तर मये कतर: वैक्सीनेशन याने लिंफ दाना ऊपर से नीचे के चमड़े में लगावोजब कि क्यूटक याने जिल्दमें जा लगे उस को थोड़ी देर वहां पर ठहरने देवे। ताकि लिंफ उस में असर कर जावे हर एक बाजू पर तीन तीन जगह आध इंच के फासले पार लगावे और निहायत होश्यारी रखनी चाहिये। नस्तर

साफ रहे याने हर एक दफे बाद टीका देने के नस्तर को साफ रखना चाहिये। जिबकि बहुत से बच्चों को टीका देना हो तब एक दाने के मवाद से पांच से जयादा बच्चों को टीका देना न चाहिये अच्छी उमर बच्चों के टीका देने के वास्ते एक महीने से लेकर छे हफते है। जबकि वुह तन्दुरुस्त है लेकिन अगर बीमारी चेचक का किसी गांव या कसबे में जोर शोर हो तो मां बप को चाहिये कि बिना लिहाज उमर अपने बच्चों को टीका करादेवें इङ्गलिस्तान मे बच्चोंको फौरन टीका दिया जाता है॥

तजवीज भरने लिंफ सलाई शीशे मे

दाने:वैक्सोनेशन को छेद बमूजब तजकर: मुंदरज: वाला देकर एक सिरा सलाई का मवाद बरामद: पर लगादोओर वुह कशश सलाई से उस के अंदर दाखल होजावेगा इ-स कदर मवाद उस सलाई के अंदर जाने दो कि जिससे तिहाई उसका भर जावे मवाद दाने: को दरम्यान में जाने दो और सलाई को सिरे से पकड़कर चंद दफे हाथ सेहि-लावो या मेज पर खड़कावो फिर बत्ती को लाट से हर दो सिरों को बंद कर दो और पहिले उस सिरे को बंद कर दो कि जिस से मवाद उस सलाई में डाला गया था एक दाने के मवाद से दो या तीन बारीक सलाई भर सकते हैं॥

अमल में लाना सलाई भरी हुई मवाद का॥

वास्ते टीका देने के दोनों सिरे सलाई के खोलो और

आहिस्ता से मवाद जो उस के अंदर है नस्तर की नोक पर बजरीये फूंक डालो या गलास याने शीशे की रकाबी पर ॥

वैकसीन पवांट याने नोक हाथीदांत ॥

वैक्सीन पवांट के दोनों सिरे ताजे मवाद में डबोने चाहिये और पीछे से खुश्क करदेने चाहिये इसी तरह दुबार: से:बार: करना चाहिये जब कि इन में से किसी लड़के को लगाना हो तो जिस सिरे से वुह मवाद के अंदर डाला गया था उस को पानी में भगोना कि मवाद खुश्क शुद: तर हो जावे तब इस मवाद को नस्तर की नोक पर लेकर बच्चे के बाजू पर लगादो यह पैंट चंद रोज के अंदर बाद पुर करने के लगावे जावेंतो बहुत मुफीद होते हैं जब कि टीका वैक्सीनेशन बाजू वा बाजू न हो सक्ता हो ॥

कवायद जिन का महकमे वैकसीनेशन को लिहाज रखना चाहिये ॥

(अ)अगर मुमकिन हो तो वैक्सीनेशन याने टीका बाजू वा बाजू करना चाहिये याने मवाद किसी बच्चे के बाजू पर जो दाने में है लेकर उसी वकत दूसरे लड़के को टीका देना चाहिये क्योंकि यह मवाद बहुत जलद दाने से अलहदा होने पर अपना जोर घटाता है और नतीजा इस का यह होता है कि या तो बिलकुल दाना नहीं निकलता या बीमारी चेचक कदरे निकलती है ॥

(ब) मवाद दान: वैक्सीनेशन तंदरुस्त बच्चे से लेना चाहिये जिस को किसी तरह की बी-

मारी जिल्दी न हो और नीज उन दाने वैक्सीनेशन से जिनको किसी तरह की हरकत न हुई हो याने साबत शकल दरुस्त हो ॥

(ज) यह माद: दाने वैक्सीनेशन आठ दिन के बाद नहीं लेना चाहिये अगर मौसम गरम हो तो सात दिन के बाद नहीं लेना चाहिये और न उस के बाद जब ऐरीओला शुरू हो गया हो ॥

(द) जबकि बच्चों को बीमारी या मरज जिल्दी हो तो उन को टीका देना नहीं चाहिये ॥

(ह) होश्यारी रखनी चाहिये कि मवाद वैक्सीनेशन जो लिया जावे वुह साफ हो वरन: जखम हो जावेगा ॥

(य) जब कि माद: वैक्सीनेशन ताज: से टीका दिया जावे तो हर एक बाजू पर तीन जगह से कम मत दो अगर मवाद ताज: न हो तो हर एक बाजू पर चार जगह से कम मत दो

(र) नेटिव सुपरिनटैनडैंट महकमे वैक्सीनेशन को चाहिये कि हमेश: लोगों को मनशाय वैक्सीनेशन का जाहर करता रहे और इस मतलब के वास्ते वुह कोई कोई दफे इस रसाले को उन को पढ़कर सुना सक्ता है उस को चाहिये कि अपने काम में सब से नरमी से पेश आवे और खबरदारी रखे कि वैक्सीनेटर भी ऐसा ही करते रहें और अगर किसी तरह की उन से बदचलनी जहूर में आवे तो चाहिये कि नेटिव सुपरिनटैनडैंट फौरन उस की रपोट करे

(ल) नेटिव सुपरिनटैनडैंट को चाहिये कि बच्चों के मां बाप को समझा देवे कि अपने बच्चों के बाजूओं पर यहां पर टीका दिया गया है धूप न लगनेदें और मिट्टी वा मखी वगैरः से बचाते रहें और बच्चोंको खुली आस्तीनका कुरता पहनावें और वह दाने वैक्सीनेशन पर कोई दवा मत लगावें अगर दाना टूटजावे या मलाजावे तो उसका जोर चेचक को रोकने का जाता रहता है और फोड़ा वा जखम बन जाता है उस पर लेटी या पानी सरदः वगैरः गाना पड़ता है ॥

तजवीज काम ॥

शुरू काम पर नेटिव सुपरिनटैनडैंट को चाहिये कि वह तहसीलदार से एक फरिस्त देहात उस परगने के लेवे । और एक नक़ल उसकी पास सुपरिनटैनडैंट जनरल महकमे वैक्सीनेशन के भेजनी चाहिये नेटिव सुपरिनटैनडैंट को चाहिये कि दो या तीन गांव में जाकर हर एक गांव में चंद तिफलान को उस वैंक्सीन याने लाग सेजो उस को सुपरिनटैनडैंट जनरल से मिला हुआ है टीका देवे और ७ वें या ८ वें दिन उसको लाज़म है कि उन गांव में फिर जावे और बाक़ी बच्चों को जिन को टीका नहिं दिया गया टीका उन बच्चों की लाग से देवे जिन को अच्छी तरह दाने बरामद न हुए हों उसी वक़्त नेटिव सुपरिनटैनडैंट को चाहिये कि मादः दाने वैक्सीनेशन से लाग ताजः सलाई या

गलास या पर्वाट में भर कर और गाव में जावें और चन्द बच्चों को उसीतरह टीका देवे जैसा कि ऊपर लिखा है ॥

जब कि तमाम देहात का मुलहजै हसब मुनदर्जे वाला हो चुका हो तो नया इलाका शुरू करना चाहिये जब कि गांव एक दूसरे के नजदीक हो तो किसी बच्चे मजबूत और तन्दुरुस्त को जिस के बाजू पर दाने वैक्सीनेशन अच्छे हों ॥ दूसरे गांव में वास्ते लेने लाग के ले जाना वाजब है और बमूजब फासले के कुच्छ बतौर इनाम उसके मां बाप को देना चाहिये उन मुकामात में कि जहां पर लोग फायदे टीका से वाकिफ हैं काम टीका का बडे २ गांव में शुरू करना चाहिये और आठवें दिन बाशंदगान देहात गिरदनवाह को जो एक या दो मील के फासले पर हों कहना चाहिये कि अपने बच्चों के वास्ते टीका कराने के गांव मजकूरः में लावें। नेटिव सुपरिनटैनडैंट को चाहिये अपने हालात आमद रफत से तहसीलदार को इतला देता रहे॥

नकशे जात जो रखने चाहिये ॥

हर एक वैक्सीनेटर नाम उन लड़कों के जिन को उस ने टीका दिया हो नकशः नंबर (अ) में दरज करेगा सातवें दिन नेटिव सुपरिनटैनडैंट बाद मुलहजः नतीजा नकशः जात में दरज करेगा और उन बच्चों को जिन को टीका दुरुस्त नहीं हुआ था उनके दुरुस्त होने की निसबत शक है

फिर टीका दिया जावेगा और नक़्श: में दरज किये जावेंगे इस नक़्श: पर दस्तख़त लंबरदार या सरदार उस गांव के और नौज़ नेटिव सुपरिनटैनडैंट के होने चाहिये । और यह नक़्श: वास्ते मुलहज: सुपरिनटैनडैंट जनरल के भेजना चाहिये । बाद इस के यह नक़्श: वास्ते रखने के हवाले लंबरदार के किया जावेगा । हर एक वैक्सीनेटर एक रोज़नामचे हसब नमून: (व) रखेगा और यह रोज़नामचे रिजिष्टर गांववार त्यार किया जावेगा ॥

नेटिव सुपरिनटैनडैंट हफ़त: बार एक रपोरट हसब नमून: (ज) बख़िदमत साहिब सुपरिनटैनडैंट जनरल भेजा करेगा और एक रपोरट माहवारी भी हसब नमूने (द) के भेजेगा और हर एक रपोरट में चाल चलन वैक्सीनेटरान के बाबत काम के लिखा करेगा ॥

बच्चों के मां बाप से दरख़ास्त ॥

जो कि तुम लोग फ़ायदे टीका से वाक़िफ़ होगये इस लिये तुम को चाहिये कि तुम लोग फ़ायद: टीका के उठाने से जो तुम को गवरमिंट से बख़रच सालयाना मबलिग १८८६६८ रुपये बंगाल अहात: में मिलते हैं अमल करो इस से तुम यक़ीन कर सकते होकि फ़ायदे जो तुम को पेशकश किये जाते हैं हक़ीक़त में हैं बच्चों के मां बाप को टीका लगाने से ख़ौफ़ करना नहीं चाहिये । क्योंकि इस में कुच्छ किसी तरह का दरद और खौफ नहीं होता और

उन बच्चों के दाने वैक्सीनेशन से मवाद लेने से ख़ौफ़ करना नहीं चाहिये । क्यों कि जब तक एक दान: भी साबूत रहेगा वुही काफी होगा । क्या तुम इस इलाज से जिससे तुम ऐसी ख़ौफ़नाक बीमारी चेचक से बच सकते हो । इनकार करोगे । अगर ऐसा करोगे तो इसमें तुमारी सरासर बेवकूफी होगी बलकि तुम अपने बच्चों को जान बूझकर मौत के पंजे में डालोगे और अब तुमारा इख़्त्यार है कि इस इलाज से उन्हें बीमारी चेचक से बचाओ । और तमाम लोग जो पढ़े हुए हैं अपनी असली रसूम से टीके को तमाम कौमों में फलाने के वास्ते निहायत कोशिश करें और बाद थोड़े अरसे के यह बीमारी हिंदुस्तान मं वैसी ही कम रह जावेगी जैसी कि फरंगस्तान में क़दरे है ॥

तमाम शुद ॥

२९ नवम्बर सन् १८७२ ई०

शिक्षा सभा यन्त्र लाहौर

हसबबुल हुकम जनाब डाक्टर न्यूटन साहिब
बहादर कायम मुकाम सुपरिनटैनडैंट
जनरल महकमे वैक्सीनेशन
मुलक पंजाब
कमतरीन श्रीधर रायटर मुलाज़म महकमे मौसूफ ने
जबान उरदू हरूफ़ नागरी में
अंग्रेजी से तरजमः किया ॥